3

बाल मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में मातृभाषा में शिक्षा का प्रभाव

कृष्ण चंद्र चौधरी*

मातृभाषा किसी भी बच्चे के संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक और भावनात्मक विकास की आधारशिला होती है, जो उसकी सोच, समझ और अभिव्यक्ति को प्रारंभिक दिशा प्रदान करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और बुनियादी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 इस तथ्य को स्वीकारते हुए प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा की भूमिका को केंद्र में रखती हैं। यह शोध-पत्र बाल मनोविज्ञान के सिद्धांतों और व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर यह समझने का प्रयास करता है कि मातृभाषा में शिक्षा देना बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को कैसे सहज, प्रभावी और सृजनात्मक बनाता है। पियाजे, वायगोत्स्की और ब्रूनर जैसे मनोवैज्ञानिकों के विचारों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि जब बच्चे अपनी परिचित भाषा में सीखते हैं, तो वे अधिक आत्मविश्वास के साथ ज्ञान को आत्मसात करते हैं। इसमें उन चुनौतियों, अवसरों और शैक्षिक नवाचारों पर भी चर्चा की गई है जो मातृभाषा आधारित शिक्षण के क्रियान्वयन में सामने आते हैं। मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना न केवल बच्चों के अधिकारों की रक्षा करता है, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता और समानता को भी सुनिश्चित करता है। यह दृष्टिकोण भाषायी विविधता को सम्मान देते हुए त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बहुभाषिकता, सांस्कृतिक एकता और वैश्विक संवाद को भी सुदृढ़ करता है। इस प्रकार, यह नीति शिक्षा को स्थानीय अनुभवों से जोड़कर वैश्विक क्षितिज की ओर ले जाने वाली समावेशी एवं दूरदर्शी पहल के रूप में सामने आई है।

बचपन जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण होता है जिसमें सीखने, समझने एवं सोचने की बुनियाद रखी जाती है और इसी अवस्था में बच्चे सबसे अधिक संवेदनशील और ग्रहणशील होते हैं। वे जिस भाषा को अपने घर, परिवार और समुदाय में प्रतिदिन सुनते और बोलते हैं, वही उनकी मातृभाषा बन जाती है जो उनके अनुभवों, अभिव्यक्तियों और भावनाओं की पहली अभिव्यक्ति होती है। बच्चों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भाषायी विकास में मातृभाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि यह न केवल उसकी सोच को दिशा देती है, बल्कि उसे अपने आस-पास की दुनिया को समझने और उससे जुड़ने में सहायता भी करती है।

**विभागाध्यक्ष*, मनोविज्ञान विभाग, सहजानंद ब्रह्मर्षि महाविद्यालय, आरा, बिहार 802 301

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 इस तथ्य को स्वीकार करते हुए यह सिफारिश करती हैं कि प्रारंभिक कक्षाओं तक बच्चों को उनकी मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि उनका बौद्धिक और भावनात्मक विकास सहज, संतुलित और प्राकृतिक रूप से हो सके। बाल मनोविज्ञान के अनुसार, जब बच्चों को उसकी अपनी भाषा में पढ़ाया जाता है, तो वह विषयवस्तु को बेहतर समझ पाते हैं, अपनी जिज्ञासाओं को सहजता से व्यक्त करते है और उनका आत्मविश्वास भी स्वाभाविक रूप से बढ़ता है। इस संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक दूरदर्शी और परिवर्तनकारी कदम है, जो शिक्षा को अधिक समावेशी, संवेदनशील और रचनात्मक बनाने की दिशा में मातृभाषा को केंद्र में रखती है। इस नीति के माध्यम से त्रिभाषा-सूत्र को नए रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो न केवल भाषाई समावेशन को बल देता है, बल्कि बच्चों की सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव और विविध भाषाओं के सम्मान को भी प्रोत्साहित करता है। मातृभाषा आधारित शिक्षा के इस दृष्टिकोण से बच्चों के सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है और उनकी पहचान मजबूत होती है, जिससे वे अपने अनुभवों को बेहतर रूप में समझते और अभिव्यक्त कर पाते हैं।

मातृभाषा का शैक्षिक महत्व

मातृभाषा में शिक्षा बच्चों को उसके जीवन के वास्तविक अनुभवों, सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक मूल्यों से सहज रूप में जोड़ती है, क्योंकि यही वह भाषा होती है जिसमें वह बचपन से सोचता, समझता और अपने विचारों को व्यक्त करता है। यह भाषा उसके मनोविज्ञान की नींव होती है, जिससे वह दुनिया को समझने और उसमें अपनी भूमिका तय करने की प्रक्रिया शुरू करता है। विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि जब बच्चे को उसकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है तो उसकी स्मरणशक्ति तेज होती है, सोचने और समस्याएँ सुलझाने की क्षमता बढ़ती है और उसमें आत्मविश्वास तथा रचनात्मकता का विकास स्वाभाविक रूप से होता है। मातृभाषा बच्चों के लिए केवल बातचीत का साधन नहीं होती, बल्कि वह उनके विचारों को आकार देने और कल्पनाओं को उड़ान देने का सबसे सशक्त माध्यम बन जाती है। जब बच्चों को वही भाषा शिक्षण के लिए मिलती है जो उनके दिल और दिमाग से जुड़ी होती है, तो वे सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय, सहज और गहराई से जुड़ जाते हैं, जिससे वे ज्ञान को न केवल जल्दी समझते हैं, बल्कि उसे लंबे समय तक आत्मसात भी करते हैं।

बाल मनोविज्ञान की अवधारणा और मातृभाषा

बाल मनोविज्ञान बच्चों की सोच, समझ, अधिगम और व्यवहार को जानने-समझने की एक वैज्ञानिक शाखा है, जो यह स्पष्ट करती है कि बच्चे अपने अनुभवों और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से किस प्रकार सीखते हैं और बाहरी दुनिया से कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। बचपन एक अत्यधिक ग्रहणशील अवस्था होती है जिसमें भाषा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि विचारों को आकार देने, उन्हें क्रमबद्ध करने और ज्ञान को समझने का आधार बनती है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में सुनते, बोलते

और सीखते हैं तो वह ज्ञान को अधिक प्रभावी ढंग से आत्मसात करते हैं, क्योंकि यही भाषा उनकी सोच और भावनाओं से सबसे निकट होती है। पियाजे का मत है कि बच्चे का संज्ञानात्मक विकास चरणबद्ध ढंग से होता है और भाषा इस विकास का अभिन्न हिस्सा होती है जो उसकी तार्किक क्षमता को दिशा देती है। वायगोत्स्की की 'निकटतम विकास क्षेत्र' की अवधारणा यह बताती है कि बच्चे सामाजिक सहयोग और संवाद के माध्यम से गहराई से सीखते हैं और यह संवाद तभी सार्थक होता है जब भाषा उनकी अपनी हो। ब्रूनर के अनुसार भाषा विचारों को संरचना देने का माध्यम है और इसके बिना अधिगम की प्रक्रिया अधूरी रह जाती है। जब बच्चों को अपनी मातृभाषा में सवाल पूछने, उत्तर देने और संवाद करने का अवसर मिलता है तो वे न केवल बेहतर ढंग से सीखते हैं, बल्कि आत्मविश्वास, रचनात्मकता और कल्पनाशीलता में भी उनका विकास होता है। बाल मनोविज्ञान इस विचार को सशक्त रूप से स्वीकार करता है कि भाषा सीखने की नींव है और उस नींव की सबसे मजबूत इकाई मातृभाषा होती है, जो बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में सबसे स्वाभाविक और प्रभावी माध्यम बनती है।

त्रिभाषा सूत्र और बहुभाषिकता

मातृभाषा बच्चों के सोचने, कल्पना करने और अपनी भावनाएँ व्यक्त करने की सबसे सहज और स्वाभाविक भाषा होती है, जो उसके संज्ञानात्मक और भाषायी विकास की मजबूत नींव रखती है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं, तो वे न केवल खुद को अधिक सहज और आत्मीय अनुभव करते हैं, बल्कि वह अपने पूर्व अनुभवों को नए ज्ञान से जोड़कर गहराई से समझने लगते हैं जिससे उसका मानसिक और बौद्धिक विकास सुदृढ़ होता है। यह प्रक्रिया रचनावादी अधिगम की उस धारणा को बल देती है जिसमें ज्ञान केवल प्राप्त नहीं किया जाता, बल्कि व्यक्ति का निर्माण किया जाता है। मातृभाषा में पढ़ने वाले बच्चों की स्मरणशक्ति अधिक मजबूत होती है, क्योंकि वे सीखी गई अवधारणाओं को अपने दैनिक जीवन और अनुभवों से जोड़कर समझते हैं, जिससे उनकी समझ, अभिव्यक्ति और समस्या समाधान की क्षमता बेहतर होती है। वे अपने विचारों को अधिक आत्मविश्वास के साथ साझा करते हैं और कक्षा में संवाद तथा सहभागिता में भी अधिक सक्रिय रहते हैं। यह भाषा उनके सामाजिक अनुभव, पारिवारिक संवाद और स्थानीय जीवन से जुड़ी होती है, जिससे उन्हें पढ़ना-लिखना, सीखने की प्रक्रिया सहज लगती है और शब्दों का अर्थ गहराई से समझने में सुविधा मिलती है। इस प्रकार मातृभाषा के माध्यम से शिक्षित बच्चों में सीखने की गति, जिज्ञासा और आत्मनिर्भरता अपेक्षाकृत अधिक विकसित होती है और वे शिक्षा को केवल सूचना नहीं, बल्कि अनुभव और समझ का माध्यम बना लेते हैं। ऐसी शिक्षा प्रणाली बच्चों के भीतर रचनात्मक सोच और विचारशीलता को विकसित करने का सबसे मजबूत आधार बनती है। इसी संदर्भ में, त्रिभाषा सूत्र की परिकल्पना कोठारी आयोग ने सबसे पहले प्रस्तुत की थी, जिसे बाद में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1986 और 2020 में औपचारिक रूप से स्वीकार किया गया। इस सूत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को तीन भाषाएँ सीखने का अवसर मिलता है— पहली भाषा मातृभाषा या स्थानीय भाषा,

दूसरी हिंदी और तीसरी एक अन्य भारतीय या विदेशी भाषा। यह व्यवस्था बच्चों को केवल भाषायी कौशल नहीं देती, बल्कि उन्हें बहुसांस्कृतिक समझ, सामाजिक विविधता की स्वीकार्यता और वैश्विक दृष्टिकोण से भी समृद्ध बनाती है। त्रिभाषा सूत्र की एक विशेषता इसका लचीलापन है, जो यह सुनिश्चित करता है कि किसी एक भाषा को जबरन न थोपते हुए स्थानीय आवश्यकताओं, बच्चों की रुचियों और संसाधनों के अनुसार भाषाओं का चयन किया जाए। यह दृष्टिकोण भाषा को न केवल शिक्षा का माध्यम बनाता है, बल्कि एक ऐसा सेतु भी तैयार करता है जो स्थानीयता और वैश्विकता, सांस्कृतिक पहचान और आधुनिक संवाद क्षमता के बीच संतुलन स्थापित करता है।

भाषायी संरक्षण और सांस्कृतिक उत्तराधिकार

मातृभाषा केवल शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम नहीं बल्कि हमारी संस्कृति, परंपराओं और सामूहिक स्मृति को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का माध्यम भी होती है। इसके द्वारा लोकगीत, लोककथाएँ, रीति-रिवाज और पारंपरिक ज्ञान स्वाभाविक रूप से बच्चों तक पहुँचते हैं, जिससे वे अपने सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ाव महसूस करते हैं। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ते हैं, तो वे न केवल विषय को बेहतर समझते हैं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों, इतिहास और समुदाय से भी आत्मीय संबंध स्थापित करते है। ऐसी शिक्षा प्रणाली उसके भीतर राष्ट्रीय चेतना, आत्मगौरव और पहचान की भावना को भी विकसित करती है। मातृभाषा में दी गई शिक्षा बच्चों को न केवल व्यक्तिगत रूप से मजबूत बनाती है, बल्कि वह उन्हें सामाजिक विविधता को सम्मान देने और एकता की भावना को आत्मसात करने की दिशा में भी प्रेरित करती है। इस प्रकार, मातृभाषा बच्चों के संपूर्ण विकास का आधार बनते हुए सांस्कृतिक उत्तराधिकार की रक्षा करती है और एक समरस, सशक्त तथा सजग नागरिक तैयार करने की भूमिका निभाती है।

सामाजिक-भावनात्मक विकास और मातृभाषा

मातृभाषा किसी भी बच्चे की सामाजिक और भावनात्मक पहचान की सबसे पहली कड़ी होती है, क्योंकि यही भाषा उसे उसके परिवार, समुदाय और आस-पास के वातावरण से प्रारंभ से जोड़ती है। जब बच्चे उसी भाषा में संवाद करते हैं जिसे वे सहजता से समझते और बोलते हैं, तो वे अपने अनुभवों को अधिक आत्मीयता और आत्मविश्वास के साथ प्रकट करते हैं। शिक्षा का माध्यम भी जब मातृभाषा होता है, तो बच्चे को यह महसूस होता है कि उसकी भाषा, संस्कृति और अभिव्यक्ति को मान्यता और सम्मान मिल रहा है, जिससे उसके भीतर सुरक्षा और अपनापन की भावना दृढ़ होती है। यह भाषा न केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम बनती है, बल्कि सामाजिक संबंधों को मजबूत करने, नैतिक सोच को दिशा देने और व्यावहारिक संवेदनाओं को विकसित करने का सशक्त जरिया भी बन जाती है। मातृभाषा में शिक्षा मिलने से घर और विद्यालय के बीच एक स्वाभाविक सांस्कृतिक पुल बनता है, जिससे बच्चे अपने व्यक्तिगत अनुभवों को सीखने की प्रक्रिया से जोड़कर शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण और जीवंत बना पाते हैं। यह भाषा उसके लिए केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि परंपराओं, मूल्यों और सामाजिक व्यवहार को सहजता से सीखने और

अपनाने का माध्यम बनती है। जब बच्चे को अपनी मातृभाषा में सीखने का अवसर मिलता है, तो वह न केवल शैक्षिक रूप से आगे बढ़ते हैं, बल्कि वह सामाजिक रूप से अधिक आत्मीय, नैतिक रूप से सजग और भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करते है।

शिक्षक की भूमिका

जब शिक्षक मातृभाषा में पढ़ाते हैं, तो वे बच्चों की भाषा, सोच और अभिव्यक्ति की शैली को सहजता से समझ पाते हैं, जिससे वे विषय को सरल और बच्चों की समझ के अनुरूप प्रस्तुत कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चों की जिज्ञासाओं को पहचानना और उनका उत्तर देना अधिक स्वाभाविक और प्रभावी हो जाता है, क्योंकि संवाद उसी भाषा में होता है जिसे वे पहले से जानते हैं। मातृभाषा शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच संवाद की दूरी को कम करती है और एक ऐसा वातावरण बनाती है जहाँ बच्चे खुलकर अपने विचार रख सकते हैं। शिक्षक जब कहानी, चित्र, गतिविधि, खेल और समूह-वार्ता जैसे तरीकों से पढ़ाते हैं, तो बच्चे सीखने में रुचि लेते हैं और सक्रिय भागीदारी करते हैं। कक्षा में जब बातचीत मातृभाषा में होती है, तो बच्चे एक-दूसरे को बेहतर समझते हैं और सहयोग की भावना भी विकसित होती है। इससे कक्षा में प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति, रचनात्मक सोच और विचारों को खुलकर व्यक्त करने की स्वतंत्रता को बल मिलता है। शिक्षक मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा को केवल जानकारी देने का माध्यम नहीं, बल्कि बच्चों की सोच को आकार देने और भाषा कौशल को निखारने का अवसर बना देता है। इस प्रकार वे कक्षा का मार्गदर्शक बन जाते हैं जो बच्चों को उनकी भाषा में सीखने, समझने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

नीति, नवाचार और क्रियान्वयन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि बच्चों को कक्षा 5 तक उनकी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि उनका बौद्धिक विकास मजबूत आधार पर आगे बढ़ सके। इस दिशा में भारत सरकार ने प्रारंभिक साक्षरता और गणना मिशन की शुरुआत की है, जिसके अंतर्गत राज्यों को मातृभाषा आधारित शिक्षण सामग्री, गतिविधियाँ और मूल्यांकन उपकरण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। पंजाब, केरल और ओडिशा जैसे राज्यों ने स्थानीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया है और साथ ही शिक्षकों को मातृभाषा में प्रभावी शिक्षण के लिए प्रशिक्षित करने हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाए हैं। भाषा आधारित मूल्यांकन ढाँचों का विकास करके यह सुनिश्चित किया गया है कि बच्चे अपने अनुभवों और परिवेश से जुड़े रहकर अधिक गहराई से सीख सकें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 और विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में भी स्थानीय भाषा में शिक्षण योजनाओं, पद्धतियों और संसाधनों को विशेष स्थान दिया गया है। इन नवाचारों और नीतिगत प्रयासों का मूल उद्देश्य यही है कि शिक्षा बच्चों की भाषा, संस्कृति और पहचान के अनुकूल हो, जिससे उनका अधिगम अनुभवजन्य, समावेशी और व्यावहारिक बन सके।

प्रभावी कार्यान्वयन की चुनौतियाँ

त्रिभाषा सूत्र की अवधारणा बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यंत प्रभावशाली है, किंतु इसके सफल क्रियान्वयन में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ सामने आती हैं जिनमें सबसे प्रमुख हैं प्रशिक्षित बहुभाषिक शिक्षकों की कमी, उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों का अभाव, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच संसाधनों की असमानता तथा माता-पिता की अंग्रेजी केंद्रित सोच और इसके प्रति झुकाव का होना। इन सभी चुनौतियों का समाधान तभी संभव है जब शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मातृभाषा आधारित शिक्षण की रणनीतियों को समुचित रूप से शामिल किया जाए, ताकि शिक्षक बच्चों की भाषायी पृष्ठभूमि को समझते हुए शिक्षा को सरल, प्रभावी और संप्रेषणीय बना सकें। साथ ही, समुदाय और अभिभावकों को यह समझाना भी आवश्यक है कि मातृभाषा केवल बोलचाल की भाषा नहीं, बल्कि बच्चों के मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास का आधार है। जब विद्यालय और परिवार मिलकर मातृभाषा को सीखने के माध्यम के रूप में स्वीकार करते हैं, तब बच्चों अधिक आत्मविश्वास से सीखते है और उसकी शैक्षिक गति भी तीव्र होती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में द्विभाषिक और त्रिभाषिक शिक्षण सामग्री का निर्माण एक व्यावहारिक समाधान बन सकता है जिससे अलग-अलग भाषायी पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी समान रूप से लाभान्वित हो सकें। तकनीक की सहायता से ऑडियो-विजुअल सामग्री, डिजिटल पाठ्यसामग्री और संवादात्मक संसाधनों का विकास कर बच्चों को ऐसे अनुभव आधारित अवसर दिए जा सकते हैं जो उन्हें रुचिकर और सहज रूप से सीखने में मदद करें। इन प्रयासों के माध्यम से मातृभाषा आधारित शिक्षा केवल नीति तक सीमित न रहकर व्यवहार में उतर सकेगी और एक प्रभावी शैक्षिक नवाचार के रूप में नई दिशा प्रदान करेगी।

निष्कर्ष

मातृभाषा केवल संवाद करने का माध्यम नहीं, बल्कि बच्चों के सोचने, समझने और सीखने की सबसे मजबूत नींव होती है, क्योंकि बच्चे उसी भाषा में सबसे पहले अपने अनुभवों को ग्रहण करते हैं। बाल मनोविज्ञान के सिद्धांत यह स्पष्ट करते हैं कि बच्चे वही सबसे अच्छे से सीखते हैं जो उनके लिए जाना-पहचाना हो और वह उनकी अपनी भाषा होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ इस विचार को अपनाते हुए मातृभाषा को प्रारंभिक शिक्षा का प्रमुख आधार मानती हैं, जो बच्चों की संपूर्ण क्षमताओं को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम बन सकती है। यदि इस नीति को व्यावहारिक रूप में क्रियान्वित किया जाए तो यह केवल शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि भाषायी समानता, सांस्कृतिक आत्मबोध और समावेशी विकास की दिशा में भी ठोस आधार तैयार करेगा। त्रिभाषा सूत्र इसी सोच पर आधारित एक ऐसा दृष्टिकोण है जो भारत की शिक्षा प्रणाली को भाषाई, शैक्षिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने की क्षमता रखता है। यह सूत्र मातृभाषा को शिक्षा का केंद्र बनाते हुए बच्चों के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को एक साथ

गति देता है और बहुभाषिकता, वैश्विक संवाद तथा सांस्कृतिक विविधता के बीच एक संतुलन स्थापित करता है। इस नीति को सफल बनाने के लिए शिक्षकों, नीति निर्माताओं और समाज के सभी हिस्सों को मिलकर सक्रिय भूमिका निभानी होगी, जिससे भारत का भविष्य भाषायी रूप से अधिक सक्षम, सांस्कृतिक रूप से अधिक सजग और शैक्षिक रूप से आत्मनिर्भर बन सके। वास्तव में मातृभाषा में शिक्षा देना केवल एक शैक्षणिक पहल नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक संरक्षण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है, जो त्रिभाषा सूत्र की आत्मा बनकर भारत को उसकी भाषायी विविधता के साथ एकजुटता की ओर अग्रसर करता है।

संदर्भ

कमिंस, जे. 2000. *लैंग्वेज, पावर एंड पेडागॉजली : बाइलिंगुअल चिल्ड्रेन इन द क्रॉसफायर, मल्टीलिंगुअल मैटर्स*. क्लेवेडन, मल्टीलिंगुअल मैटर्स, इंग्लैंड.

चौधरी, कृष्ण चंद्र. 2018. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल, विकास और शिक्षा*. बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना.

———. 2020. 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साँचे से होगा परिवर्तनकारी सुधार और दूरगामी प्रभाव.' *प्राथमिक शिक्षक*. अंक 4, पृ.सं. 17–25. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

पियाजे. 1952. *द आरिजिन ऑफ इंटेलीजेंस इन चिल्ड्रेन*. इंटरनेशनल यूनिवर्सिटीज प्रेस, न्यूयॉर्क.

बर्नर, जे.एस. 1966. *टूवार्ड ए थ्योरी ऑफ इंस्ट्रक्शन*. एम.ए., हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज.

महिला और बाल विकास मंत्रालय. 2013. *आई.सी.डी.एस. मिशन*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

यादव, पद्मा. 2020. 'प्राथमिक शिक्षा का बदलता स्वरूप : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020'. *प्राथमिक शिक्षक*. अंक 4, पृ.सं. 26–35. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

यूनेस्को. 2016. इफ यू डोंट अंडरस्टैंड, हाऊ कैन यू लर्न? *ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट*. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000243713

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCF-FS-2022-English.pdf

———. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCF-SE-2023-English.pdf

वाईगोत्स्की, एल.एस. 1978. *माइंड इन सोसायटी : द डेव्लपमेंट ऑफ हायर सायकोलोजिकल प्रोसेस*. एम.ए., हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज.

शर्मा, प्रेमपाल. 2021. *योजना*, '*शिक्षा नीति और भारतीय भाषाएँ*'. अंक : फरवरी. पृ.सं. 53–55. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf